अंतरदेश

जुलाई 2022

विक्रम संवत 2079

सरहदों के पार
हिंदी का संसार

प्रवेशांक

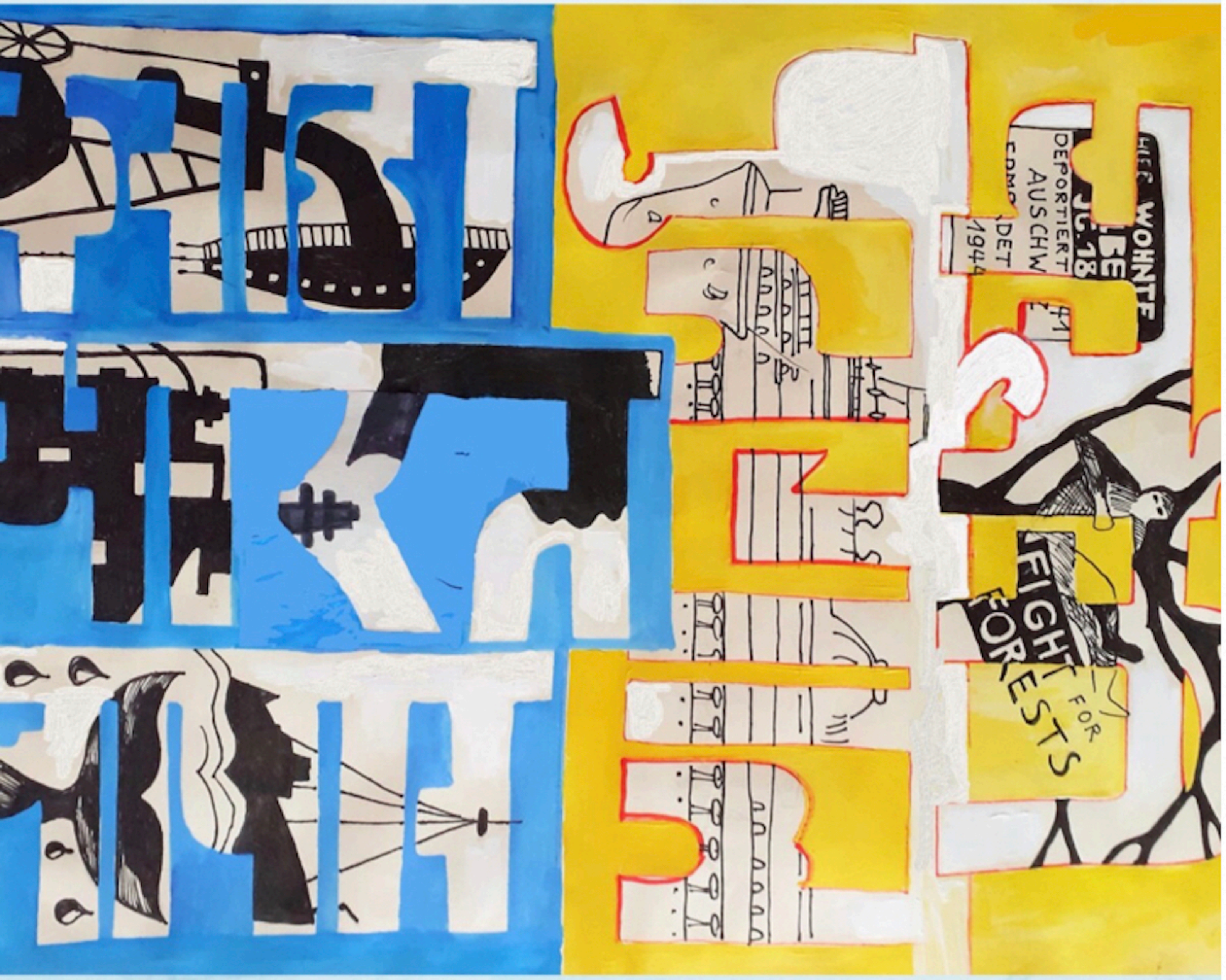

इस बार कैनेडा, चीन, जर्मनी, जापान, बल्गारिया,
पुर्तगाल और स्विट्ज़रलैंड से

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

संपादक मंडल (अवैतनिक):
अडेलै हैन्निश-टेंबे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी, adele_hennig@gmx.de
आनंद वर्धन शर्मा, सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया, anandsharma_64@yahoo.co.in
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली, erika.caranti@gmail.com
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी, ram.prasad.bhatt@uni-hamburg.de
वेद प्रकाश सिंह, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान, singh.ved.prakash.hmt@osaka-u.ac.jp
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, shivsingh@campus.ul.pt
हंसा दीप, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, कैनेडा, hansa.deep@utoronto.ca

प्रवेशांक संपादक:
दिव्यराज अमिय
ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड,
divyaraj.amiya@uni-tuebingen.de, divyaraj.amiya@aoi.uzh.ch

संयोजक: *प्रोजेक्ट साथ साथ और कर्मेन्दु शिशिर शोधागार*

Karmendu Shishir Shodhagar | University of Tübingen (uni-tuebingen.de)

संपादन सहयोग:
ग़ुलाम उमर, पटना विश्वविद्यालय, पटना, gholamumar@gmail.com

भाषा संपादन:
चंद्रिका, chandrika.media@gmail.com
Birchindia, भारतीय भाषाओं में अनुवाद और शोध सहयोग एजेंसी

गंगाशरण सिंह, gangasharansingh1974@gmail.com
स्वतंत्र लेखन, महाराष्ट्र

आवरण चित्र: क्रिस्टीने मेत्स, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

स्थायी और वैधानिक संपर्क पता:
नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2022
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, संपादक मंडल के नहीं।

विषय सूची

दृश्य - श्रव्य

जर्मन छात्रों का एक दिन : https://youtu.be/9ivctF3lKb8

अलग अलग साथ साथ: https://youtu.be/GsgwQk8S_cw

लद्दाख मेरी यात्रा: https://youtu.be/SOXPBE9e6xY

वेरेना: https://youtu.be/gX7XmbbacE0

संपादकीय

विशेष

जर्मनी में भारत-विद्या एवं हिंदी का इतिहास 16

राम प्रसाद भट्ट

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल पर दो लेख

रेणु : एक पुनर्मूल्यांकन 44

हाइन्त्स वर्नर वेस्लर

उप्साला विश्वविद्यालय, स्वीडन

मैला आँचल के बहाने हिंदी-जापानी अनुवाद की कुछ समस्याएँ 51

मिकि यूइचिरो

हिरोशिमा, जापान

हिंदी पढ़ने-पढ़ाने का अनुभव: अहिंदी भाषी अध्यापक

हम हिंदी के माहिर बनने के बजाय भाषा की भूलभुलैया में खोए और हिंदी सीखने में उम्र क़ैदी क्यों बने रहेंगे? 60

अडेलै हैन्निश-टेंबे

लाइप्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी

एक जापानी विद्यार्थी और मेरे नाट्य-जीवन के कुछ अनुभव 65

तोमिओ मिज़ोकामी

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

मेरा हिंदी पढ़ने और पढ़ाने का अनुभव 71

लक्ष्मी रेखा शर्मा

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

बहुसंस्कृति के परिवेश में हिंदी अध्यापन के अनुभव 74

हंसा दीप

यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, कैनेडा

ललित निबंध

एक आगे, एक पीछे : न अभिमान, न अपमान 78

दीप्ति वागले

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो

हँसिए, सेहतमंद रहिए 81

इसरा कुरैशी,

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो

कोरोना का कहर 83

श्रेया टंगुटूरी

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो

वटवृक्ष 86

सारा वायहिंग

ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी

एक रवायत की पहचान 90

आंद्रे ब्रोएनिग

ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी

कविताएँ

सफ़ेद बर्फ़ 94

वालेंतिना मारिनोवा

सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया

प्रतीक्षा 96

लिलिया देनेवा

सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया

तीन कविताएँ 98

सिद्धार्थ वत्स

यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो

कहानियाँ

अमीर औरत की डायरी 103

अन्नालेना शुल्त्से

लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी

मानसून का जादू 106

माग्दालेना वार्नर

म्यूनिख़ विश्वविद्यालय, जर्मनी

एक कप चाय 109

इकिगाई और छोटा मगर 112
मार्लेने त्साईस
ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी

फ़िल्मी दुनिया और फ़िल्म समीक्षा

हिचहायकर्स गाईड टू द गैलेक्सी 116
सारा आकरमन
ज़्यूरिख़ विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड
डॉली, किट्टी और वे चमकते सितारे : दो औरतों की मुक्ति की खोज 121
सौफ़ी डीकमन
लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
बॉलीवुड 123
बियात्रिस हैस इतोतुजी
लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल
लैला और मजनूँ : सिर्फ़ एक प्रेम कहानी? 129
मंजीत सिंह
ज़्यूरिख़ विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड

वाद्य यंत्र और व्यंजन

पनीर भुर्जी या खाना बनाने में क्या-क्या सीख सकते हैं ? 133
बर्नाडेट श्टाउडर
लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
भारतीय संगीत वाद्य – क्या आपको मालूम है कि मैं कौन हूँ? 137
वेरोनिका निकलास
लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी

हास्य व्यंग्य

जर्मन व्यापार संस्कृति 141
आर्नो दोहमन
बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी

समाज, संस्कृति और इतिहास

सिन्तियों का इतिहास 144
फ्रांत्स- एलियास श्नेक
ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी
भारत-जापान संबंध पर विशेष सामग्री 148
राजनीति के बारे में 149
तोमोहारु ओगुरा
ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

भारत-जापान आर्थिक सम्बन्ध 151

हयाता तानिकावा

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

जापानी और भारतीय खाने के बारे में 153

युज़ुरु इशी

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

जापान और भारत के धर्म के बारे में 155

कोदाई इनोउए

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

जापानी और भारतीय कंपनियों के बारे में 157

अयाका ओगावा

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

मेट्रो के बारे में 159

शुई ओदा

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

इतिहास के बारे में 160

ताकुमी कावागुची

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

संस्कृति के बारे में 161

शिनो नकाए

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

जापान में भारत पर एक दृष्टि 162

दियाना बास्कोविचि

तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज़, जापान

जापान में पढ़ने की संस्कृति 168

कुबोता हारुका

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

मैं और भारत 170

ओसावा कोकोरो

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

यात्रा वृत्तांत

लद्दाख की पहचान 176

अलेक्सांदर बोग्दनोव

सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया

फ़रवरी 2020 में मेरी भारत यात्रा 179

वेरेना वेस्टफाल

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

मुंबई की झुग्गी का मेरा अनुभव 182

अदिंदा शकुंतला पेतिलों

लिस्बन, पुर्तगाल

भारत की स्कूली शिक्षा एक जर्मन शिक्षिका की नज़र में 184

क्रिस्टीने मेत्स

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

ईरान का यात्रा वृत्तांत 187

योहाना क्रुस्ल

ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी

सामयिक विवेचना

षड्यंत्रवाले सिद्धातों के विरुद्ध: तलवार के दांतवाले बाघ को भगानेवाली होम्योपैथिक गोलियाँ 192

योनस फ़ेस्टोर्फ़

लाइप्त्सिग, जर्मनी

अंतरदेश के प्रवेशांक के लिए अन्निम की पच्चीस कहानियाँ

अन्निम रोबोट पर पच्चीस कहानियों पर एक नज़र 211

एजाज़ुर रहमान

दूरदर्शन, प्रसार भारती

जहां रोबोट फिर से आदिवासी हो जाते हैं: अंतिम रोबोट पर पच्चीस कहानियों पर एक नज़र 216

प्रेम रंजन अनिमेष

दृश्य - श्रव्य

जर्मन छात्रों का एक दिन : https://youtu.be/9ivctF3lKb8

अलग अलग साथ साथ: https://youtu.be/GsgwQk8S_cw

लद्दाख मेरी यात्रा: https://youtu.be/SOXPBE9e6xY

वेरेना: https://youtu.be/gX7XmbbacE0

संपादकीय

प्रिय पाठकगण !

अन्तरदेश का प्रवेशांक आपके समक्ष है । हमारी पत्रिका का उद्देश्य मुख्यतः अहिंदी भाषियों को एक ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करना है जहां वे हिंदी में अपनी साहित्यिक और ग़ैर-साहित्यिक रचनात्मकता को अभिव्यक्ति दे सकें ।

प्रवेशांक में कैनेडा, चीन, जर्मनी, जापान, बल्गारिया, पुर्तगाल, स्विट्ज़रलैंड और स्वीडन से मूलतः हिंदी में लिखी लगभग हर विधा की रचनाएँ यथा कविता, ललित निबंध, हास्य-व्यंग्य, यात्रा-वृत्तांत, राजनीतिक विश्लेषण, कहानियाँ और लघु कथाएँ आपको मिलेंगी । इस अंक में यदि कुछ अधिक रचनाएँ जर्मन भाषी क्षेत्र और जापान से हैं तो अगले अंक में दूसरे देशों से भी होंगी ।

हमारी दीर्घकालीन योजना है कि विश्व के विभिन्न सांस्कृतिक और भाषा-भाषी क्षेत्रों में हिंदी में रचनाकारों और पाठकों के सक्रिय समूह तैयार करने में मदद देना ।

जैसा कि विषय सूची के आपको पता चलेगा कि कुल सामग्री मात्र लिखित ही नहीं बल्कि दृश्य-श्रव्य भी है । छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक इस अंक के लिए विशेष फ़िल्में और रिपोर्ताज़ तैयार किए हैं जो पाठकों और दर्शकों के लिए रोचक होंगे।

पत्रिका के लिखित हिस्से में रेणु जी के रचनाकर्म और मैला आँचल पर दो आलोचनात्मक निबंध हैं जो स्वीडन में अध्यापनरत हाइन्त्स वर्नर वेस्लर और जापान से मिकि यूइचिरो के हैं।

विदेशों में हिंदी का पठन-पाठन भारत से आए शिक्षकों तथा स्थानीय अहिंदी भाषियों के लिए कई बार एक भूल-भुलैया की यात्रा से कम रोमांचकारी नहीं है। इस अनुभव से गुज़रने को लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी की अडेलै हैन्निश-टेंबे ने बखूबी कलमबद्ध किया है।

बल्गारिया से आई रचनाएँ साहित्यिक हों या यात्रा वृत्तांत, लिखित हों या वीडियो रूप में अपनी प्रौढ़ और गंभीर भाषा से प्रभावित किए बिना नहीं रहतीं। अलेक्सांदर बोग्दनोव, सोफिया विश्वविद्यालय, बल्गारिया की लद्दाख यात्रा पर लेख और वीडियो दोनों उल्लेखनीय हैं। कैनेडा से दक्षिणी एशिया के मूलतः अहिंदी भाषा-भाषी छात्रों के विचार बिन्दु भाषा से आगे बढ़ कर जीवन को समझने और समझाने की दिशा देते हैं। पुर्तगाल की रचनाओं में धारावी पर लेख मुख्यधारा के चिंतन को उन झुग्गी-झोपड़ियों को समझने की नई दृष्टि देगा। हैम्बर्ग (हाम्बुर्ग) के निबंध, अकादमिक तौर पर जर्मनी में हिंदी के इतिहास का परिचय देते हुए, हिंदी पढ़ाने के अनुभव और भारत यात्राओं के वृत्तांत हैं। लाइप्त्सिग, जर्मनी से आई कहानियों के अलावा कोरोना पर एक राजनीतिक विश्लेषण की रचनाओं की अतिरिक्त तीक्ष्णता को हम अनदेखा नहीं कर पाएँगे चाहे वह भारत की पाक कला में धैर्य के महत्त्व को रेखांकित करनेवाली रचना हो या भारतीय वाद्य यंत्रों के लेकर बनाई गई पहेलियाँ।